A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय संगीत में सौन्दर्य बोध का तात्त्विक अध्ययन

Dr. DEV RAJ SHARMA
Associate Professor, Govt. College Sangrah.

OPEN ACCESS

सार

मानव एक सौन्दर्य प्रिय प्राणी है। जब तन मन और हृदय सभी सौन्दर्य में मिलकर अन्तर व बाह्य परिपेक्ष्य में एकाकार होते हैं तो वही मानव की सृष्टि करता है। प्रकृति में लहलाते खेत एवं वनों की सांय सांय ध्वनि, नदी की कलकल करती आवाज और झरने की लय ताल बद्ध झरझर ध्वनि में, संगीत का ही तो मौन संदेश है। ध्वनि से उत्पन्न व्यंजन शब्द को जन्म देता है, शब्द अर्थ को जन्म देता है, अर्थ से स्पन्दन की उत्पत्ति होती है, स्पन्दन से स्वर की पुनरावृत्ति होती है और इस स्वर से सौन्दर्य की सृष्टि होती है। जब तक शब्द का प्रभुत्व रहता है तब तक भौतिक आनन्द और जब स्वरोत्पत्ति होती है तब आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। इस आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति ही सौन्दर्य का तत्त्व है। संगीत में सौन्दर्य का आधार स्वर है। यदि स्वर में मधुरता है तो इसका रसास्वादन आंखें बंद करके भी लिया जा सकता है।

रस और सौन्दर्य एक -दूसरे के पूरक है। लय में जो ताल का महत्व है, वही रस में सौन्दर्य का। रस प्रक्रिया में चार भावों का उद्बोधन होता है-स्थाई भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव। मनुष्य के हृदय में स्थाई भाव सदैव विद्यमान रहते है। उन भावों के उद्दीपन से ही रस की निष्पत्ति होती है। महर्षि भरत के अनुसार भाव, विभाव अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इसी प्रकार राग में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न स्वरों से रस की निष्पत्ति मानी गई है। रस की निष्पत्ति तभी होती है जब मनुष्य को किसी चीज़ से आनन्द प्राप्त हो और संगीत तो है ही आनन्द प्राप्ति का साधन। जब स्वर की सत्ता प्राप्त होती है तब आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति होती है यही आध्यात्मिक आनन्द ही सौन्दर्य तत्व है। कला से प्राप्त आनन्द को आलौकिक कहा गया है। संगीत में सौन्दर्य का आधार स्वर है। यदि स्वर में मधुरता हो तथा उचित ढंग से स्वरों का उच्चारण किया जाए तो परमानन्द की प्राप्ति होती है तथा यही सौन्दर्य को निरन्तर जन्म देती रहती है।

***मुख्य शब्द**: सौन्दय, रस, भाव, उद्दीपन, आध्यात्मिक, निष्पत्ति।*

भूमिका

भावों को व्यक्त करने की लालसा प्राणी मात्र का स्वभाव है। ध्वनि द्वारा अपने भावों को प्रकट करने की चेष्टा मानव द्वारा की जाती है। चेष्टा और ध्वनि में अभिव्यंजना की दृष्टि से चेष्टा सर्वोपरि दृष्टिगोचर होती है। यह जाति, धर्म और समुदाय से ऊपर है। यदि चेष्टा को नाद की सहायता मिल जाए तो उसका प्रभाव व्यापक हो जाता है। भावाभिव्यक्ति के साधनों में नाद के उस रूप का विशिष्ट स्थान है जो व्याकरण की दृष्टि से निरर्थक होता है। यह निरर्थक कहे जाने वाले भाव स्वतन्त्र रूप से भाव व्यंजन में समर्थ होते हैं। भाषा के जिस वाचन को पाठ की संज्ञा दी जाती है वह स्वरों से युक्त होने पर ही पाठ कहलाता है और वक्ता के वास्तविक अभिप्राय का बोध कराते हैं। उस अवस्था में स्वरों का स्पर्श मात्र करते हुए ऊँचे नीचे होते हैं। मुनिषियों ने कहा है कि शब्दों को उचित स्वर में बोला जाए तभी वे अर्थ को प्रकट करते हैं। पाठ्य वस्तु में स्वर प्रयोग तथा गेय स्वर समूह में भाव व्यंजन की अनुभूति होती है। जैसा कहा गया है कि राग वह है जिसमें रंजकता हो, मानव चित प्रसन्न हो। इसका मतलब यही है कि राग में वह सभी तत्व एवं गुण विद्यमान होने चाहिए जिनमें रंजन हो। सौन्दर्य की दृष्टि से किसी श्रोता का संगीत विद्वान होना आवश्यक नहीं। क्योंकि संगीत समझने की नहीं अपितु अनुभव करने की वस्तु है। शब्द को समझकर उसे स्वर में ढालकर और लय का समायोजन कर आनन्द को रक्त और प्राण के माध्यम से मनोमय कोष तक पहुँचाते हैं।

सौन्दर्य और रस

संगीत कला सभी कलाओं में श्रेष्ठ कला मानी जाती है। कला मानव संस्कृति की उपज है। मनुष्य में रचनात्मक प्रवृति स्वाभाविक है। पर्णकुटी से प्रासाद तक बढ़ते हुए मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं की, बल्कि उसने अपने भीतर उत्कृष्ट सौन्दर्य चेतना का विकास किया और मन की संतृप्ति को अपना लक्ष्य बनाया। ललित कलाएँ मनुष्य के सौन्दर्यबोध की प्रतीक है लेकिन संगीत में सौन्दर्यबोध अन्य कलाओं की अपेक्षा सबसे अधिक है। ''किसी सुन्दर वस्तु के देखने पर, जिस रस का आस्वादन हमारा मन करता है, उस आस्वादन को सौन्दर्य कहा जाता है।''(1) कला के क्षेत्र में सौन्दर्य, कलाकार के हृदय में उत्पन्न होता है, पलता है और पुष्ट होता है तथा अनेक माध्यमों से प्रकट होता है। संगीत सौन्दर्यबोध में एक स्वर का दूसरे स्वरों से सम्बंध, षड्ज मध्यम, षड्ज पंचम भाव, अल्पत्व-बहुत्व एवं स्वर लगाव बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सभी

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तत्व संगीत में माधुर्य का भाव उत्पन्न करते हैं। माधुर्य का सम्बन्ध मन के सुखानुभूति से है। संगीत में राग शुद्धता ही राग-काकु स्थापित करती है। वादी-संवादी, कण, मींड, मुर्की तथा इष्ट स्वरों के प्रयोग से राग में प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। राग रचना में रागालाप, गत, ताने तोड़ों एवं विभिन्न प्रकार के तालों के प्रयोग से सौन्दर्य प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

''रस और सौन्दर्य एक ही बात है। लय में जो ताल का महत्व है, वही रस में सौन्दर्य का है, 'रस' भाव में उत्पन्न अनुभूति पूर्ण वह तत्व है, जो झरने की सतत-प्रवाहित जलराशी के समान कला-सुमेरू से फूटकर कहता रहता है। इस भाव में जहाँ उत्प्रेक की अवस्थाएँ आती रहती है, वहीं सहृदय को सौन्दर्य की अनुभूति होती है।''(2)

प्राणी मात्र में चेष्टा और ध्वनि के द्वारा भावों को प्रकट करने की लालसा स्वभाव से होती है। चेष्टा को यदि नाद की सहायता मिल जाए तो उसका प्रभाव बहुत व्यापक हो जाता है। शब्द, स्वर और चेष्टा की सम्मिलित शक्ति 'रस' की अलौकिक सृष्टि करने में सहायक सिद्ध होती है। ''मनुष्य के हृदय में स्थाई भाव सदैव विद्यमान रहते हैं। इन भावों के उद्दीपन से ही रस उत्पन्न होता है और उस रस से कला जन्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है। इसी को अंग्रेजी भाषा में 'एस्थेटिक वेल्यु ऑफ आर्ट' कहते हैं।''(3)

देश, काल, संबंध, स्थिति - इन सबको भूलकर हम कला की अनिर्वचनीय सता में पहुँच जाते हैं और इस समय हमारे हृदय में जिस आनन्द का अविर्भाव होता है, उसी को सौन्दर्यबोध अथवा रसानुभूति की अवस्था कहते है।

मानव जाति के अन्तःकरण में निवास करने वाली विशिष्ट भावनाओं के सतोगुण प्रधान परमोत्कर्ष को ही 'रस' कहा जाता है अथवा जब कभी स्वाभाविक वस्तु कुछ परिवर्तित होकर मन के अन्दर एक असाधारण नवीनता उत्पन्न कर देती है तब उसे 'रस' कहते है।

रस प्रक्रिया

रस प्रक्रिया में चार भावों का उदबोधन होता है:- स्थाई भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

स्थाई भाव:- हम जो कुछ देखते हैं, सुनते हैं या अनुभव करते हैं उनका संस्कार हमारे मन पर पड़ता है। अनुभव क्षणिक होने के कारण नष्ट हो जाता है परन्तु वह एक स्थाई संस्कार छोड़ जाता है। जब कभी अनुकूल या उदबोधक सामग्री प्राप्त होती है तो मन के ये सुप्त संस्कार प्रायः जग जाते हैं। ये संस्कार जन्म से या जन्म से पूर्व के भी हो सकते है। ऐसे संस्कारों की गणना असम्भव है परन्तु फिर भी इन संस्कारों या भावों को निश्चित करने की दृष्टि से प्राचीन आचार्यों ने कुछ चेष्टा की और इन संस्कारों को स्थाई भावों के नाम से सुनिश्चित किया। ये आठ भाव माने गए:- रति, ह्रास, शोक, क्रोध, भय, उत्साह, जुकुप्सा और विस्मय। परन्तु बाद में आचार्यों ने नवे स्थाई भाव 'निर्वेग' की स्थापना की। संगीत में स्वर-सन्निवेश के द्वारा रस-प्रक्रिया में स्थाई भाव का आलंबन अंश स्वर होता है, जिसकी संज्ञा स्थाई स्वर होती है। स्थाई स्वर का संवादी स्वर उद्दीपन विभाव का कार्य करता है। प्रयुज्यमान अनुवादी स्वर अनुभाव का कार्य करते है। संचारी स्वर भावों के प्रकाशक होते है।

विभाव:- विभाव दो है, आलम्बन और उद्दीपन। स्थाई भावों को जो भाव उद्दीप्त करते हैं वे आलम्बन कहलाते हैं। बाह्य परिस्थितियां, प्राकृतिक सौन्दर्य इत्यादि आलम्बन विभावों को उद्दीप्त करती है और इन आलम्बन विभावों के द्वारा उद्दीप्त स्थाई भावों को और अधिक प्रकट करने वाले भाव उद्दीपन विभाव कहलाते हैं।

अनुभाव:- विभाव के दो आलम्बन और उद्दीपन के कारण स्थाई भावों के प्रभाव से मनुष्य की चेष्टाएं भिन्न हो जाती है। इन्हीं चेष्टाओं या भाव भंगिमाओं को अनुभाव कहा जाता है।

संचारी भाव:- मनुष्य के मन में स्थाई रूप से न रहने वाले अर्थात अस्थाई रूप से व्यक्त होने वाले भाव संचारी भाव कहलाते हैं। ये अनेकों स्थाई भावों के विभाव और अनुभाव के कारण उत्पन्न होते हैं। अतः संचार होने के कारण इन्हें संचारी भाव कहा जाता है। ये 33 हैं।

भाव, विभाव, अनुभाव एवं संचारी भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। यह महर्षि भरत ने इस सम्बन्धों एक सूत्र में कहा है, ''विभावा, अनुभावा, व्याभिचारी संयोगवाद रस निष्पत्ति''।

हिन्दी साहित्य में नौ रस माने गए हैं - श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, विभत्स, भयानक, अदभूत और शान्त।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

महर्षि भरत ने प्रधान चार रस माने - श्रृंगार, रौद्र, वीर और विभत्स। इन्हीं से क्रमशः हास्य, करूण, अदभूत और भयानक रसों की उत्पत्ति होती हैं। हमारे शास्त्रकारों ने सात स्वरों के रस इस प्रकार बताये हैं:-

- सा, रे - वीर, रौद्र तथा अदभूत रसों का पोषक
- ग, म - करूण रस
- प - हास्य रस, श्रृंगार रस
- ध - विभत्स तथा भयानक रस
- नि - करूण रस

कुछ विद्वानों ने राग में प्रयुक्त होने वाले स्वर से रस की निष्पत्ति मानी है। राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों के माध्यम से उसमें रस को जोड़ा है। जैसे कोमल स्वर वाले रागों का सम्बंध भक्ति और करूण रस से जोड़ा है। दोनों माध्यमों का प्रयोग श्रृंगार रस से जोड़ा है। कोमल ग, ध, नि स्वरों से वीर रस का सम्बंध जोड़ा है। कुछ विद्वानों ने विशिष्ट राग से विशिष्ट रस की उत्पत्ति मानी जाती है। जैसे भैरवी राग को करूण व श्रृंगार रस के लिए उपयुक्त माना है। ''रस को हम किसी भी वस्तु का आधार या मूल आत्मा कह सकते हैं। अर्थात जिस धातु का स्वाद ले सकें, जिसकी अनुभूति कर सकें वही रस है। रस का अर्थ भिन्न भिन्न तरह से लिए जाने लगा है। वेदों में रस को सोम रस के लिए प्रयुक्त किया गया है। उपनिषद में इसे चिदानंद कहते हुए ब्रह्मा नंद सहोदर कहा है।''(4) रस की निष्पति तभी हो सकती है जब मनुष्य का वस्तु में आनन्द प्राप्त हो तथा संगीत तो है ही आनन्द प्राप्ति का साधन इसलिए संगीत में रस निष्पति स्वतः ही हो जाती है। जब लय और छन्द के साथ रस मय संगीत होता है तो चरम आनन्द की अनुभूति होती है। ''इस सृष्टि में लय का महत्व कम नहीं है। संगीत में साधारणतया लय के तीन प्रकार माने जाते है - विलम्बिति, मध्य और द्रुत। करूण रस के लिए विलम्बित लय का प्रयोग करना पड़ेगा। इसी प्रकार श्रृंगार, वीर, रौद्र, हास्य आदि के लिए मध्य लय और अदभूत वीर आदि के लिए द्रुत लय सहायक होगा।''(5)

सौन्दर्य बोध

सौन्दर्य का अर्थ है सुन्दरता। सुन्दरता को देखने और उसकी सराहना करने की क्षमता को ही सौन्दर्यबोध कहते है। यह किसी वस्तु या व्यक्ति में उपस्थित वह गुण है जो मन को तीव्र आनन्द एवं गहरी सन्तुष्टि देता है। ध्वनि से उत्पन्न व्यंजन शब्द को जन्म देता है, शब्द अर्थ को जन्म देता है, अर्थ से स्पंदन उत्पन्न होता है, स्पंदन से पुनः स्वर का जन्म होता है तथा उस स्वर से सौन्दर्य की सृष्टि होती है। जब तक शब्द की सत्ता रहती है, तब तक भौतिक आनन्द और जब स्वर की सत्ता प्रारम्भ होती है, तब आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। यह आध्यात्मिक आनंद ही सौन्दर्य तत्त्व है। संगीत की सृजन प्रक्रिया सौन्दर्य को निरन्तर जन्म देती रहती है। इसलिए श्रोता एवं कलाकार द्वैत से अद्वैत की ओर बढ़ते रहते हैं। संगीत कला का सीधा प्रभाव हमारे अन्तःकरण से जुड़ा होता है। इसी प्रकार संगीत कला आत्मानंद का अनुभव कराने में माध्यम बनती है। आनंद एवं सौन्दर्य कला से उत्पन्न नहीं होता अपितु उससे कला का जन्म होता है। कलाकार यदि आनन्द के स्वरूप को न पहचानता तो उसकी कला से सौन्दर्य की सन्तुष्टि नहीं हो सकती। इसलिए हर व्यक्ति कलाकार नहीं बन सकता।

जिस प्रकार मूल रंग सात होते हैं अथवा मूल रसना छः होते है परन्तु नेत्र और जिह्वा केवल उनसे तृप्त नहीं होते है, अपितु उनके असंख्य भेदों की इच्छा रखते हैं। काल भी इन सात स्वरों के अतिरिक्त नित्य नूतन स्वर-संदर्भों के उदभव से सन्तुष्ट होते हैं। शोक, उत्साह, हर्ष आदि चितवृतियों का जब नाद के स्पंदन में स्थित श्रुतियों से तादाम्य होता है तो मनुष्य की चेतना स्थिर होती है तथा इस स्थिर अवस्था में सौन्दर्य बोध होता है। मन में स्थित रजोगुण और तमोगुण इस स्थिति में स्वयं तिरोहित हो जाते है और अन्तःकरण से सत्व का उदय होता है। इसी तरह जब हम कोई श्रृंगार रस का राग सुनते है तब हमारे मन में प्रेम, प्यार की भावना उत्पन्न होती है तथा जब हमें करूणा, व्यंजक राग सुनाई देता है तो हमारे अन्दर करूणा का भाव जागृत होने लगता है। फलस्वरूप उस समय हमें आनन्द की अनुभूति होने लगती है और यही सौन्दर्यबोध है। यह तभी सम्भव है जब हम उस राग में लगने वाले स्वरों का उचित प्रयोग हो। कलाओं से प्राप्त इस आनन्द को अलौकिक कहा गया है। नंदिकेश्वर इस सिद्धान्त के सर्वप्रथम आचार्य है। राग के द्वारा भाव प्रकाशन अथवा नाद के द्वारा इस प्रक्रिया में ग्रन्थों का आज अभाव है। इस प्रकार के ग्रन्थ तेरहवीं शताब्दी से पहले उपलब्ध ये जो आज अनुपलब्ध है। तेरहवीं शताब्दी के बाद जब राग एवं तालों में रस एवं भावों का अभाव होने लगा तो राग के रूप और ध्यान विकसित हुए।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संगीत में सौन्दर्य का आधार स्वर है। यदि स्वर में मधुरता है तो इसका रसास्वादन आंखें बन्द करके भी लिया जा सकता है। संगीत का सौन्दर्य स्वरों के आकर्षक मेलों से है संगीत के सृजन की प्रक्रिया स्वर सौन्दर्य को निरन्तर जन्म देती रहती है। नाद का सौन्दर्य उसमें उत्पन्न नाद, अगाध और अनन्त है। संगीत का सौन्दर्य बोध, स्वर की उत्पत्ति उसकी विशेषता समय, जाति लय एवं गुण पर केंद्रित है। उसकी अभिव्यक्ति के साधन भी अनन्त और असीम है। स्वरो के साथ रंगों का घनिष्ठ सम्बंध है। किसी भी रंग को स्वर और स्वर को रंग में परिवर्तित किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के रंग हमारे मन में विभिन्न विचार उत्पन्न करते हैं। अगर हम इनके सौन्दर्य बोध पर विचार करें तो हमें महसूस होता है कि कोई भी रंगीन वस्तु हमें केवल इसलिए नहीं प्रभावित करती कि वह रंगीन है बल्कि हमारा मन और बुद्धि वहीं शांत होते हैं जहाँ रंगों में संयोजन, अनुक्रम अनुपात और उनमें मूर्त शिल्प हमारे अन्तःकरण पर प्रतिबिंबित होकर विचार में स्थित ध्वनि बिंदुओं के साथ एकता प्राप्त करते हैं। रंग के पीछे नाद की स्थिति होती है और रंग के प्रति मन में जो विचार उठता है, उसके पीछे भी नाद कारण होता है। इन दो नादों में जब भी साम्यावस्था होती है अथवा एकरूपता होता है तभी सौन्दर्य की सृष्टि हो जाती है। जिस प्रकार मूल सात रंग होते हैं अथवा मूल रसना रस छः होते हैं, परन्तु नेत्र और जिह्वा केवल उनसे तृप्त नहीं होते, अपितु उनके असंख्य भेदों की इच्छा रखते हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य के कान भी केवल मूल सात स्वरों की ध्वनियां सुनकर तृप्त नहीं होते बल्कि नित्य नूतन स्वर-संदर्भों के उद्भव से ही संतुष्ट होते हैं। हर्ष, शोक, उल्लास, उत्साह इत्यादि चित वृतियों का जब नाद के स्पंदन में स्थित श्रुतियों से तादाम्य होता है तो मनुष्य की चेतना स्थिर होती है और इस स्थिर अवस्था में ही सौन्दर्य बोध होता है।

निष्कर्ष

सौन्दर्य बोध का सम्बंध हृदय से है और हृदय शरीर में स्थित है। शरीर जिस भूमि विशेष से सम्बन्धित होता है उसी के अनुसार हृदय को रस ग्रहण करने की आदत हो जाती है। संगीत का सौन्दर्य बोध स्वर की उत्पत्ति, उसके प्रकार, समय, जाति, घनत्व, लय गुण पर आधारित है। शब्दों को उचित स्वर में बोला जाए तभी वे अर्थ को प्रकट करते हैं। राग भी वही है जिसमें अनुरमण हो, रंजकता हो तथा जो मानव हृदय को प्रसन्न करें तथा सौन्दर्य बोध में यही सब तत्व मौजूद होते हैं। संगीत में सौन्दर्य बोध अन्य कलाओं की अपेक्षा सबसे अधिक होता है। क्योंकि संगीत का सीधा सम्बंध मनुष्य के हृदय एवं आत्मा से होता है। संगीत में रस का अत्यधिक महत्व है। रस और सौन्दर्य एक ही बात है। संगीत में जो महत्व स्वर का है, ताल में लय का है, वही रस में सौन्दर्य का है। रस में चार भावों का उदबोधन होता है - स्थाई भाव, विभाव अनुभाव और संचारी भाव। मनुष्य के हृदय में स्थाई भाव हमेशा विद्यमान रहते हैं। भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। संगीत में लगने वाले स्वरों से विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है। संगीत में सौन्दर्य का आधार स्वर है अगर राग में लगने वाले स्वरों को सही रूप से लगाया जायें तो स्वतः ही सौन्दर्य बोध की उत्पति हो जाती है। श्रोता आखें बन्द करके उसका रसास्वादन करता है। संगीत की सृजन प्रक्रिया स्वर सौन्दर्य को निरन्तर जन्म देती रहती है। संगीत की तीनों विधाएँ गायन, वादन एवं नृत्य सौन्दर्य बोध का अहसास कराने में सहायक है।

संदर्भ

1. गर्ग लक्ष्मी नारायण डॉ. निबंध संगीत पृ. 298
2. गर्ग लक्ष्मी नारायण डॉ. संगीत विशारद पृ. 594
3. गर्ग बालकृष्ण, संकलन, गर्ग लक्ष्मी नारायण डॉ., निबंध संगीत पृ. 221
4. संगीत एवं सौंदर्य शास्त्र, उतराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, पृ. 10
5. श्री वास्तव हरिश्चन्द्र प्रो., प्रवीण प्रवाह, पृ.-93